Indian J. Soc. & Pol. 07 (02) : 95-100 : 2020 **ISSN: 2348-0084 (PRINT)**
31 July 2020 **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

भारत–जापान सम्बन्ध : दोस्ती के नए आयाम

संतोष कुमार[1]

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, कमला नेहरू कॉलेज नई दिल्ली, भारत

ABSTRACT

प्रस्तुत आलेख वैश्वीकरण के सन्दर्भ में जापान की ओर भारत की विदेश नीति को निर्धारित करने वाले विभिन्न कारकों का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया हैं। इस पेपर में मुख्यतौर पर भारत–जापान राजनीतिक सम्बन्ध दोनों देशो के बीच सुरक्षा सहयोग, परमाणु समझौते, आर्थिक सहयोग, व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते, जापानी विदेशी प्रत्यक्ष निवेश और जापानी आधिकारिक विकास सहायता मूल्यांकन करने का प्रयास किया गया हैं। इस आलेख में द्विपक्षीय टाई जैसे राजनयिक सामरिक और आर्थिक पहलुओं के विभिन्न मानकों का विश्लेषण करने के अलावा इस बात पर भी चर्चा करने की कोशिश की गयी है कि भारत–जापान संबंधों को अपनी क्षमता को प्राप्त करने से क्या क्या बाधायें आती रही है।

KEYWORDS: *भारत,जापान, अन्तर्राष्ट्रीय संबंध, टाई,*

भूमिका

भारत और जापान संबंधों में निकटता का कारण सर्वप्रथम चीन का उदय, और एशिया में भू–राजनीति की बदलती प्रकृति, और एशिया–प्रशांत में स्थित देशो की उभरती हुई अर्थव्यबस्थाओं से जोड़ा जा सकता है। द्वतीय भारत परिवर्तन के एक नये दौर से गुजर रहा है। देश की 50 फीसदी से ज्यादा आबादी 30 साल से कम उम्र की है। और देश से रोजगार की अपेक्षा रखती है। मोदी की मेक इन इंडिया नीति इस चुनौती से निपटने में कारगर सिद्ध हो सकती है बशर्ते रोजगार सृजन के लिये पर्याप्त निवेश हो और आवश्यक ढांचागत सुविधाओं का निर्माण हो। पिछ्ले तीन वर्षो में जापान ने भारत को इस दिशा मे काफी योगदान दिया है। अहमदाबाद– मुम्बई बुलेट ट्रेन इसका बडा प्रमाण है। और भारत का एशिया महदीप में एक उभरती हुई अर्थव्यबस्था और बाजार जापान को आकर्षित करने का सबसे प्रमुख कारण हैं। दूसरा चीन का वन बेल्ट वन रोड जिसने भारत और जापान दोनों ही देशों को चीन की दूरगामी सामरिक और आर्थिक रणनीति के बारे मे सशंकित कर रखा है। दोनों ही देश चीन के साथ अपने अपने सीमा विवाद को लेकर उलझे हुए हैं और चीनी दुस्साहस से भी खासे परेशान हैं। भारत–चीन के बीच हाल ही में समाप्त हुए डोकलाम विवाद से ये स्पष्ट होता है। डोकलाम का एक सकारात्मक पहलू ये रहा कि इस मुद्दे पर जापान ने खुल कर भारत का साथ दिया जबकि अमेरिका ने इस मामले पर चुप्पी साधे रखना ही बेहतर समझा। और दोनों हीं देश अपने द्विपक्षीय संबंधों को लेकर पहले से कहीं अधिक उत्सुक और गंभीर भी दिखते है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

1998 के पोखरण परमाणु विस्फोट के बाद जापान की थोड़ी सी हिचकिचाहट के बावजूद ऐतिहासिक रूप से भारत और जापान संबंध सामंजस्यपूर्ण रहे है (सिंह, 2007)। भारत–जापान सम्बन्धो का इतिहास काफी पुराना हैं। ईसा से छठी शताब्दी पूर्व जापान में बौद्धधर्म के प्रसार के माध्यम से दोनों देश पहली बार एक–दूसरे के निकट आए थे। इसलिए भारत को लंबे समय से जापान में बौद्ध धर्म की उत्पत्ति के देश के रूप में देखा जाता रहा है। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान जापान शासन की मदद से सुभाष बोस ने सिंगापुर में आजाद हिन्द फौज की स्थापना की थी। इस सन्दर्भ में रबींद्र नाथ टैगोर और राश बिहारी बोस की जापान यात्रा भी बेहद महत्वपूर्ण थी (Retrived from www.mofa.go.jp/region/asia-paci/india/index.html.)। रूस पर जापान की विजय 1905 ने भारत के स्वाधीनता सेनानियों को प्रेरणा दी। जापान द्वारा द्वितीय महायुद्ध की समाप्ति के दौरान आत्म समर्पण करने पर भारत ही ऐसा देश था जिसने जापान के प्रति सहानुभूति दिखायी। अन्तर्राष्ट्रीय सैन्य अधिकरण ने जब जापान के 28 युद्धबन्दियों को फांसी की सजा सुनायी तो भारत के न्यायाधीश राधा विनोद पॉल ने इस निर्णय पर अपना विरोध दर्ज किया।

आधुनिक भारत–जापान राजनयिक संबंध 1952 में स्थापित किए गए थे। तब से दोनों देशों के राजनीतिक, व्यापार, आर्थिक, सुरक्षा और तकनीकी सहयोग के आधार पर सौहार्दपूर्ण संबंध रहे हैं। 1956 में कुछ जापानी संसद सदस्यों ने देश की आर्थिक राजनीतिक और सामाजिक स्थितियों का अध्ययन करने के लिए भारत का दौरा किया। दोनों देशों के मध्य राजनीतिक सम्बन्धों को पुख्ता करने के लिए भारत के उपराष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन ने 1956 में प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरू ने अक्टूबर 1957 में तथा राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने 1960 में जापान की यात्राएं कीं।

जापान वर्ष 1958 से भारत को सरकारी विकास सहायता प्रदान करता आ रहा है। भारत जापान से यह सहायता प्राप्त करने वाला प्रथम देश था। भारत को जापानी सरकारी विकास सहायता, ऋण सहायतानुदान तथा तकनीकी सहयोग के रूप में जापान अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग अभिकरण के माध्यम से प्राप्त होती है। जापान भारत को सहायता देने वाला सबसे बड़ा द्विपक्षीय दाता भी है। तथापि 1960 से 1980 के दशकों के बीच घनिष्ट संबंधों की यह गति थोड़ी कमजोर पड़ी थी। जापान के प्रधान मंत्री हयातो इकेडा ने 1961 में भारत का दौरा किया था परंतु जापान के किसी प्रधान

1: Corresponding Author

मंत्री द्वारा अगली यात्रा लगभग दो दशक बाद प्रधान मंत्री यसुहीरो नकासोने द्वारा 1984 में हुई थी। प्रधान मंत्री राजीव गांधी ने 1988 में टोकियो का दौरा किया जिससे पुनः भारत –जापान स्थायी राजनीतिक सम्बन्धो की शुरूआत हुई।

शीत युद्ध के दौरान जहां जापान एक तरफ अमरीकी सैन्य गठबन्धनों की नीति जैसे NATO का समर्थन किया वहीं भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति अपनायी। भारत जहां उपनिवेशवाद एवं साम्राज्यवाद तथा रंगभेद नीति का विरोधी था वहीं जापान अमरीका जैसी साम्राज्यवादी ताकत के निकट रहा हैं। जब भारत ने 1961 में पूर्व पुर्तगाली शक्तियों से गोवा को मुक्त कराने की कार्यवाही की तो जापान ने भारत का खुले शब्दों में समर्थन नहीं किया। इसी प्रकार 1962 में भारत पर चीनी आक्रमण के समय जापान के तटस्थ रुख ने भारत को काफी निराश किया। संक्षेप में यदि यह कहा जाये कि प्रारम्भिक वर्षों में राजनीतिक एवं आर्थिक सम्बन्धों की सक्रिय पहल के बावजूद दोनों देशों की विदेश नीतियों एवं अनेक मुद्दों पर दृष्टिकोणों में विभिन्नता बनी रही (दत्त, 2016)।

भारत–जापान सम्बन्धो को एक बड़ा झटका उस वक्त लगा जब भारत ने 1998 में परमाणु परीक्षण किया तो जापान ने इसकी कड़े शब्दों में निंदा की और भारत को जापान से प्राप्त होने वाली अनुदान राशि को निलंबित कर दिया गया। भारत–जापान सम्बन्ध पुनः सामान्य 2005 हुए जब जापानी प्रधान मंत्री जुनिचिरो कोइजुमी ने भारत की आधिकारिक यात्रा की और दोनों प्रधान मंत्रियों ने फैसला किया 2006 से हर साल बार्षिक शिखर सम्मेलन आयोजित करेंगे। तब से शिखर सम्मेलन हर साल हो रहा है। 2006 में भारतीय प्रधान मंत्री डॉ मनमोहन सिंह ने शिखर बैठक में भाग लेने के लिए जापान की आधिकारिक यात्रा की और दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों ने सामरिक और वैश्विक साझेदारी (Retrived from http://mea.gov.in/bilateraldocuments.htm?dtl/6368/Joint+Statement+Towards+IndiaJapan+Strategic+and+Global+Partnership) पर हस्ताक्षर किए। जिसमें सहयोग के पांच क्षेत्रों की पहचान की राजनीतिक, रक्षा और सुरक्षा सहयोग के आधार पर, व्यापक आर्थिक साझेदारी, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, पीपल तो पीपल एक्सचेंज(People to People Exchange)। प्रधान मंत्री डॉ मनमोहन सिंह ने फिर से 2007 में शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए जापान का दौरा किया। एक संयुक्त वक्तव्य "अगले दशक में भारत–जापान सामरिक और वैश्विक साझेदारी के लिए दृष्टि" जारी किया था। (http://pib.nic.in/newsite/PrintRelease.aspx?relid=66562)
अक्टूबर 2010 में टोक्यो में दोनों प्रधान मंत्रियों ने भारत–जापान व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते पर संयुक्त घोषणा पर हस्ताक्षर किए। जापानी प्रधान मंत्री श्री योशीहोको नोडा ने दिसंबर 2011 में भारत की राजकीय यात्रा की और दोनों प्रधानमंत्रियों ने भारत–जापान कूटनीतिक सम्बन्धो की स्थापना की 60 वीं वर्षगांठ के अवसर पर "भारत–जापान सामरिक और वैश्विक साझेदारी के संवर्धन के लिए दृष्टि" नामक एक संयुक्त वक्तव्य पर हस्ताक्षर किए।

2017 में भारतीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने जापान की आधिकारिक यात्रा की और जिसके बदले में जापानी प्रधानमंत्री शिंजो आबे ने सितंबर 2017 में भारत–जापान द्विपक्षीय संबंधों के विकास को चिह्नित करते हुए भारत का दौरा किया। छह वर्षों से अधिक लंबी चर्चा के बाद इस यात्रा के दौरान दोनों राष्ट्रों ने असैनिक परमाणु समझौते पर हस्ताक्षर करने का फैसला किया क्योंकि 2011 की फुकुशिमा आपदा के कारण देरी हुई थी। दोनों प्रधान मंत्री ने इसे भारत–जापान संबंधों में ऐतिहासिक कदम बताते हुए इस कदम का स्वागत किया।

भारत–जापान राजनीतिक संबंध

21वीं शताब्दी में भारत और जापान के बीच घनिष्ठ संबंधों के विकास में तेजी से प्रगति देखी गई है। 1952 में जापान ने अपनी संप्रभुता हासिल करने के एक दशक बाद इन दोनों के बीच संबंध काफी सकारात्मक थे। भारत एशिया का पहला देश था जिसने जापान को एक स्वतंत्र देश के रूप में स्वीकार किया और मान्यता प्रदान की और 1952 में पंण्डित नेहरू ने जापान के साथ शांति संधि पर हस्तक्षार किये और औपचारिकरूप से जापान के साथ कूटनीतिक सम्बन्धो की नींब डाली। जापानी प्रधान मंत्री किशी नोबसुक ने 1957 में भारत का दौरा किया और तत्पश्चात भारतीय प्रधान मंत्री पंडित नेहरू ने उसी वर्ष जापान का एक और दौरा किया। अगले वर्ष 1958 में भारतीय राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद जापान गए थे। जापानी राजकुमार कोमात्सु अकिहितो ने 1960 में भारत का दौरा किया। 1958 में भारत जापानी ओडीए प्राप्त करने वाला पहला देश था। हालांकि अगले दशकों में अच्छे संबंधों की इस गति को शीत युद्ध आरम्भ होने के कारन इस गति को बनाए रखा नहीं जा सका।

शीत युद्ध राजनीति से भारत और जापान संबंध भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके जैसा की ज्ञातव्य हैं की शीट युद्ध विश्व को दो भागो मैं विभाजित कर दिया था एक तरफ अमेरिका और उसके मित्र राष्ट्र वहीं दूसरी तरफ सोवियत यूनियन और उसके मित्र राष्ट्र थे। इस द्वि–ध्रुवीय दुनिया में जापान अमेरिका के साथ निकटता से जुड़ा हुआ था। वहीं दूसरी तरफ भारत गुट–निरपेक्षता की नीति अपनाई और इसे यूएसएसआर के करीब माना जाता था। यही कारण था 1961 की जापानीज प्रधानमंत्री इकेदा हायतो की भारत यात्रा के बाद दूसरी जापानीज प्रधानमंत्री की भारत यात्रा 23 सालो के बाद 1984 में हुई थी। जब नकासोने भारत की यात्रा पर आये थे इससे स्पस्ट हैं। कि दोनों देशों के लिए राजनीतिक संबंध सर्वोच्च प्राथमिकता नहीं थी। इस अवधि के दौरान आर्थिक सम्बन्धो को बनाए रखा गया था लेकिन यह संतोषजनक स्तर से बहुत दूर था (ताकेनोरी और वर्मा, 2013)।

सन 1991 के बाद भारत और जापान संबंधों में प्रगति आयी। भारत ने सन 1991 में पीवी नरसिम्हा राव सरकार के नेतृत्व में आर्थिक उदारीकरण की प्रक्रिया शुरू की। जिसका जापान ने दिल खोलकर स्वागत किया। और भारत को भविष्य के एक बाजार के रूम में देखना आरम्भ किया। भारत–जापान संबंधो के इतिहास में यह एक सुखद शुरुआत थी। भारत– जापान संबंधो एक बढ़ा झटका तब लगा जब 1998 में भारत ने पोखरण में परमाणु परीक्षण किया तब जापान ने अचानक से भारत के साथ अपने कूटनीतीक सम्बन्धो को स्थगित कर दिया और भारत को जापान से प्राप्त होने वाली

आर्थिक सहायता को बंद कर दिया। साथ ही साथ जापान पश्चिमी देशो के साथ मिलाकर भारत पर अपना परमाणु कार्यक्रम वापस लेने और एनपीटी (Nuclear Non-Proliferation Treaty) और CTBT (Comprehensive Test Ban Treaty) पर हस्तक्षार करने के लिए दबाब बनाना शुरू कर दिया। जिस कारण से भारत–जापान सम्बन्धो में तनाव की स्थित पैदा होगयी। वहीँ भारत यह चाहता था कि टोक्यो भारत की सुरक्षा चुनोतियो को समझे और भारत के साथ सहयोग करे यह भारत–जापान सम्बन्धो को सबसे तनावपूर्ण दौर था (दत्त,2016)।

21वीं शताब्दी की शुरुआत के साथ दोनों देशों के बीच संबंध न केवल सामान्य रूप से बहाल किए गए बल्कि रणनीतिक और वैश्विक साझेदारी पर भी दोनों देशो ने हस्ताक्षर किये हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर और क्षेत्रीय स्तर पर हो रहे परिवर्तनों ने दोनों देशो को साथ आने के लिए प्रेरित किया हैं। आज दोनों राष्ट्र समान प्रकार के सुक्षा चुनोतियो का सामना कर रहे है जैसे आतंकबाद समुद्री सुरक्षा प्राकृतिक आपदाएं आदि दोनों ही राष्ट्र सहयोग करने के नए क्षेत्र तलाश रहे हैं। दोनों राष्ट्रों सितंबर 2004 में नौसेनाओ का "संयुक्त अभ्यास" आरम्भ करके भारत–जापान सम्बन्धो में एक नया अध्याय जोड़ा हैं (खन्ना, 2013)।

सामरिक और सुरक्षा सहयोग

पिछले एक दशक में भारत और जापान के बीच रक्षा और सुरक्षा सहयोग तीव्र गति से बढ़ा है और अब दोनों देशों की रणनीतिक साझेदारी (Strategic Partnership) का एक आधारभूत स्तंभ बन गया है। दोनों राष्ट्र आज सैनिक (Military Cooperation) और नेवी सहयोग (Navy Cooperation) में बढ़ चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं। दोनों राष्ट्र एशिया–प्रशांत और हिंद महासागर में एक समान सुरक्षा चुनोतियो का सामना है। दोनों राष्ट्र समुद्री मार्गों की सुरक्षा को बनाए रखने अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद और अपराध समुद्री डाकू (Piracy) और WMD के प्रसार से निपटने में एक दूसरे के साथ सहयोग कर रहे है। भारत और जापान हरमज और मलाका में भी एक दूसरे के साथ सहयोग कर रहे हैं। जिसके द्वारा भारत का अधिकांश व्यपार होता हैं। दोनों राष्ट्र पायरेसी और आतंकबादी गतिविधियों के खिलाफ अमेरिका के साथ कन्धा से कन्धा मिलाकर लड़ रहे है।(वही)

जापानीज प्रधान मंत्री आबे की अगस्त 2017 की भारत यात्रा के दौरान दोनों राष्ट्रों ने अपने सुरक्षा सहयोग को और अधिक डाइवर्सिफाइड किया हैं। इसी सिलसिले को आगे बढ़ाते हुए दोने देशो के प्रधानमंत्रियों ने सुरक्षा सहयोग पर 2007 में संयुक्त घोषणा और एक्शन प्लान 2009 जारी किया था और इस घोषणापत्र में यह कहा गया की दोनों राष्ट्रों की नौसेना जिसमे भारतीय नौसेना और जापान मेरीटाइम सेल्फ डिफेन्स फार्स नियमित आधार पर संयुक्त सैन्य प्रशिक्षण में शामिल होंगे और 2012 के बाद दोनों देशो की नौसेना नियमित रूप से संयुक्त सैन्य अभ्यास कर रही हैं। इसके पश्चात जब 2012 में पुनः शिंज़ो अबे की सत्ता में वापसी हुई। तो उन्होंने डायमंड अवधारणा के बारे में बात की। इस अवधारणा के तहत संयुक्त राज्य अमेरिका जापान ऑस्ट्रेलिया और भारत को शामिल किया गया हैं जिसका उद्देश्य इंडो पसिफ़िक क्षेत्र में शांति सुरक्षा और स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए एक दूसरे का सहयोग करना था । (Retrived from http://mea.gov.in/bilateraldocuments.htm?dtl/6159/Joint+Statement+Visit+of+Mr+Pranab+Mukherjee+Minister+of+Defence+to+Japan.)

भारत और जापान के बीच सुरक्षा और रक्षा सहयोग से सम्बन्धित विभिन्न मुद्दों पर सहयोग करने के अन्य फ्रेमवर्क भी हैं जिसमे 'two plus two Dialogue' रक्षा नीति वार्ता, सेना से सैन्य वार्ता, और तट रक्षक सहयोग के लिए तट रक्षक, शामिल हैं। प्रधान मंत्री मोदी ने 2017 में अपनी जापान यात्रा के दौरान Malabar Military Exercise में जापान की नियमित भागीदारी और डिफेन्स फ्रेमवर्क एग्रीमेंट को लागू करने के लिए जापान की सराहना की जोकि रक्षा उपकरणों और प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण से संबंधित है।

परमाणु सहयोग

भारत–जापान नागरिक परमाणु समझौता जो 2017 में लागू हुआ हैं जो दोनों राष्ट्रों के बीच की राजनैतिक और रणनीतिक समझ को दर्शता है। इससे दोनों राष्ट्रों के मध्य ऊर्जा सुरक्षा और स्वच्छ ऊर्जा के क्षेत्र में बढ़ते सहयोग के लिए मार्ग प्रशस्त होगा। यह समझौता शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए परमाणु ऊर्जा के विकास और उपयोग में भारत और जापान के बीच पूर्ण सहयोग को प्रोत्साहित करेगा। लंबे समय तक विचार–विमर्श के बाद भारतीय प्रधान मंत्री मोदी की जापान यात्रा के दौरान नवंबर 2016 में असैनिक परमाणु समझौते पर हस्ताक्षर किए गए थे(https://timesofindia.indiatimes.com/india/India-Japan-sign-landmark-civil-nuclear-deal/articleshow/55371858.cms.)। यह समझौता जापान को परमाणु प्रौद्योगिकी निर्यात करने के साथ–साथ भारतीय परमाणु ऊर्जा संयंत्रों के लिए वित्त प्रदान करने की अनुमति भी देता है। नई दिल्ली परमाणु प्रसार संधि रेजीम के बहार जापान के साथ असैनिक परमाणु समझौता करने बाला पहला देश बन गया है। आरम्भ में जापान भारत के साथ यह समझौता करने के लिए तैयार नहीं था। जिसका बहुत स्वाभविक कारण यह था कि 1945 में परमाणु बमबारी और 2011 में फुकुशिमा परमाणु आपदा की तवाही थी। इस ऐतिहासिक समझौता की औपचारिकताओं को जुलाई 2017 में पूर्ण करने के साथ लागू कर दिया गया हैं। जिसकी शुरुआत तत्कालीन भारतीय प्रधान मंत्री मनमोहन सिंह और जापानी प्रधान मंत्री शिन्जो आबे की संयुक्त घोषणा 2006 में की थी। भारत ने जापान के अलावा संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस, दक्षिण कोरिया, मंगोलिया, फ्रांस, नामीबिया, अर्जेंटीना, कनाडा, कज़ाखस्तान और ऑस्ट्रेलिया के साथ भी असैनिक परमाणु समझौते पर हस्ताक्षर किए है।(http://www.financialexpress.com/india-news/india-japan-civil-nuclear-cooperation-deal-comes-into-force/771969/.)

भारत–जापान आर्थिक संबंध

भारत–जापान आर्थिक संबंध की शुरुआत भी 1952 में राजनयिक संबंध स्थापित करने के साथ होगयी थी। भारत 1958 से

ही जापानी आधिकारिक विकास सहायता प्राप्त कर रहा हैं। दरअसल इन दोनों देशों के आर्थिक संबंधों का इतिहास बहुत पुराना है जिसका आधार कपास व्यापार हुआ करता था। भारत–जापान आर्थिक संबंधों में बड़ी सम्भावनाये है प्रथम इन दोनों राष्ट्रों की अर्थव्यवस्थाओं के मध्य पाये जाने बाली समानताओं के कारण दूसरा भारत का अंतर्राष्ट्रीय स्तर विशाल बाजार के रूप में उभारना तीसरा भारत के पास प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्द्धता और जापान के पास प्राकृतिक संसाधनों कमी के होने के कारण जापान हमेशा से भारत के साथ अच्छे आर्थिक संबंध चाहता रहा हैं।

पूर्वी एशिया में जापान और दक्षिण एशिया में भारत अपने अपने रीजन की दो सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थायें होने के साथ साथ दोनों में आर्थिक सहयोग की विशाल संभावनाएं भी हैं। दो अर्थव्यवस्थाओं के बीच कई समानताएं भी हैं। हालांकि जापानी अर्थव्यवस्था अत्यधिक उन्नत होने के साथ साथ विश्व की तीसरे नंबर की सबसे बढ़ी अर्थव्यवस्था है। जबकि भारत एक विकासशील अर्थव्यवस्था है। दोनों देशो की अर्थव्यवस्थाएं सेवा क्षेत्र पर काफी निर्भर करती है। जापानी की अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र लगभग 71 प्रतिशत योगदान करता है जबकि औद्योगिक और कृषि क्षेत्र क्रमशः 27.5 प्रतिशत और 1.2 प्रतिशत से भी कम योगदान करते है। दूसरी ओर भारत की अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र 56.9 प्रतिशत योगदान औद्योगिक और कृषि क्षेत्र क्रमशः 25.9 प्रतिशत और 17 प्रतिशत का योगदान करते है। (https://www.indembassytokyo.gov.in/india_japan_economic_relations.html,)

हाल के वर्षों में भारत–जापान आर्थिक मोर्चे पर काफी संक्रिय होगये हैं जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में किये गए विभिन्न प्रकार के समझौते है। इसी सिलसिले को आगे बढ़ाते हुए 2011 में दोनों देशों ने ऐतिहासिक 'भारत–जापान व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। जिसका उद्देश्य भारत एवं जापान के बीच व्यापार की लगभग 94 प्रतिशत मदों से टैरिफ का उन्मूलन करना है। इससे इन दोनों देशों के आर्थिक संबंधों में तेज़ गति आयी है। 2003–04 से भारत चीन को पीछे छोड़कर सबसे बड़ा ओडीए प्राप्तकर्ता देश बन गया है। भारत को जापान का लगभग 30 प्रतिशत ओडीए प्राप्त होता है। सितंबर 2014 में भारतीय प्रधान मंत्री मोदी की जापान यात्रा के दौरान जापानी प्रधान मंत्री शिन्जो आबे ने आने वाले अगले पांच वर्षों में भारत के सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों में 35 बिलियन का निवेश करने का वादा किया था। दोनों देशों ने वर्ष 2019 तक जापानी एफडीआई और भारत में जापानी कंपनियों की संख्या को दोगुनी करने का लक्ष्य भी निर्धारित किया था। वर्तमान में भारत के विभिन्न हिस्सों में लगभग 1000 जापानी कंपनियां काम कर रही हैं। जिसमें कैनन, कसिओ,, फुजी फोट, हौंडा, सुजुकी, सोनी, मित्सीबिशि, तोशिबा, पैनासोनिक, यामाहा, टोयोटा, निशान आदि प्रमुख जापानीज कम्पनियॉ हैं। (https://www.indembassytokyo.gov.in/india_japan_economic_relations.html,)

दोनों राष्ट्रों के मध्य द्विपक्षीय व्यापार उतना अच्छा नहीं है जितना कि होना चाहिए था। चीन के साथ जापानी द्विपक्षीय व्यापार की तुलना में भारत–जापान व्यापार अभी भी बहुत कम है। वही चीन भारत के सबसे बड़े व्यापारिक भागीदार के रूप में उभरा है। हालांकि पिछले दो दशकों से भारत–जापान व्यापार में वृद्धि हुई है और इस्पात ऑटोमोबाइल पाट्र्स और मशीनरी की प्रसंस्करण जैसे उत्पादों में जापान से भारत में निर्यात में बढ़ोत्तरी दर्ज की गयी है। हालांकि 2008–09 वैश्विक आर्थिक संकट के चलते देशों की मुद्रा में उतार–चढ़ाव के कारण 2009 में द्विपक्षीय व्यापार में गिरावट आई थी। लेकिन 2010 में लंबी चर्चा के बाद दोनों देश द्विपक्षीय व्यापार को तेज करने के लिए व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते पर हस्ताक्षर करने पर सहमत हुए और जिसे 2011 में लागू कर दिया गया हैं। इस समझौते को लागू करते समय भारत–जापान द्विपक्षीय व्यापार कुल 10 अरब डॉलर का हुआ करता था। वित्तीय वर्ष 2012–2013 में भारत–जापान द्विपक्षीय व्यापार 18.61 अरब अमेरिकी डॉलर तक पहुंच गया था। जो 2006–07 और 2012–13 के बीच दोनों देशों के मध्य द्विपक्षीय व्यापार दोगुना हो गया था। हालांकि 2015–16 में कुल व्यापार 18.5 बिलियन डॉलर की चोटी से नीचे गिरकर 14.5 अरब डॉलर पर आगया था। (https://www.indembassytokyo.gov.in/india_japan_economic_relations.html,) 2020 तक दोनों देशो का लक्ष्य द्विपक्षीय व्यापार को 50 बिलियन डॉलर तक पहुंचना हैं।

2015–16 में भारत जापान को 4.66 बिलियन डॉलर का निर्यात करता था जबकि आयात 9.85 अरब डॉलर का था। दोनों राष्ट्रों के मध्य व्यपार की अत्याधिक सम्भावनाओ के बाबजूद व्यपार की धीमी गति चिंता का विषय हैं। भारत जापान को पेट्रोलियम उत्पाद लौह, अयस्क रत्न और आभूषण समुद्री उत्पाद, तेल, भोजन, फेरोलोय अकार्बनिक/कार्बनिक रसायन आदि का निर्यात करता है। जबकि जापान भारत को मशीनरी, परिवहन उपकरण, लौह और इस्पात, इलेक्ट्रॉनिक सामान का आयात करता हैं।

भारत में जापानी विदेशी प्रत्यक्ष निवेश

एफडीआई भारत–जापान आर्थिक संबंधों का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू है। Japan Bank for International Cooperation (JBIC(के द्वारा किये गए सर्वेक्षण में भारत को सबसे आकर्षक निवेश गंतव्य के रूप में प्रथम स्थान दिया गया है। हाल के दिनों में भारत में जापानी एफडीआई में वृद्धि हुई है लेकिन यह अभी भी जापान की कुल आउटवर्ड एफडीआई की तुलना में बहुत कम है। भारत जापान में निवेश करने वाला चौथा बढ़ा देश हैं। भारत में जापानी एफडीआई 2004 में 139 मिलियन अमरीकी डालर से बढ़कर 2008 में 5551 मिलियन डॉलर तक पहुंच गयी थी जिसका सबसे बड़ा कारण जापान की Daichi सांक्यो के द्वारा भारत की रानीबैक्सी का अधिग्रहण था। भारत में जापानी एफडीआई 2013–14 में 1.7 अरब डॉलर से बढ़कर 2015–16 में 2.61 अरब डॉलर की होगयी थी।(वही) अप्रैल 2000 से मार्च 2016 तक भारत में जापान का कुल निवेश की मात्रा 20.966 अरब अमेरिकी डॉलर की रही है जो इस अवधि के दौरान भारत के कुल एफडीआई का लगभग 7 प्रतिशत

था। 2000 से 2012 के दौरान जापानी कंपनियों ने भारत में 12.66 अरब डॉलर का वास्तविक निवेश किया है। यह भारत में कुल एफडीआई प्रवाह का 7 प्रतिशत था और जिसने जापान को मॉरीशस सिंगापुर और अमेरिका के बाद भारत में चौथा सबसे बड़ा निवेशक बना दिया (वही)

जापान की एफडीआई भारत में मुख्य रूप से ऑटोमोबाइल उद्योग विद्युत उपकरण फार्मास्यूटिकल्स व्यापार और दूरसंचार क्षेत्र आरही है। भारत की तेज़ी से उभरती अर्थव्यवस्था और स्थिर निवेश वातावरण जापानी फर्मों के लिए बड़े अवसर प्रस्तुत करता है। भारत का बुनियादी ढांचा विनिर्माण ऑटोमोबाइल बिजली धातु नवीकरणीय ऊर्जा खाद्य प्रसंस्करण और इलेक्ट्रॉनिक हार्डवेयर आदि कुछ क्षेत्र हैं जो जापानी निवेशकों और जापानीज कंपनियों के लिए निवेश के सुनहरे अवसर प्रदान करते हैं।

भारत में जापानी ओडीए

जापानी आधिकारिक विकास सहायता (ओडीए) भारत–जापान आर्थिक संबंधों का एक और महत्वपूर्ण पहलू है। विकासशील देशों की सहयता करने के उद्धेश्य से ओडीए की शुरुआत जापान ने कोलंबो योजना पर हस्ताक्षर किए जाने के बाद 1954 में आरम्भ की थी। जापान दुनिया में दूसरा सबसे बड़ा अनुदान देने वाला देश है। पिछले 30 वर्षों में जापान ने आधिकारिक विकास कार्यक्रम के माध्यम से लगभग 200 अरब डॉलर से भी अधिक विकास सहयता प्रदान की है। और भारत 1958 में जापानी ओडीए प्राप्त करने वाला पहला देश था और 2003–04 में भारत चीन को पीछे छोड़कर जापानी ओडीए को प्राप्त करने वाला सबसे बड़ा देश बनकर भी उभरा हैं।

जापान लंबे समय से सक्रिय रूप से ओडीए के माध्यम से भारत को आर्थिक सहायता प्रदान कर रहा है। जापान ओडीए के माध्यम से भारत में कई मकसद की पूर्ति कर रहा है प्रथम ओडीए "जापान–भारत सामरिक और वैश्विक साझेदारी" के अनुसार भारत–जापान संबंधों को मजबूत करने के लिए महत्वपूर्ण साधनों में से एक है। दूसरा भारत के टिकाऊ विकास में ही एशिया का विकास शामिल है जो जापान की शांति और सुरक्षा के लिए जरुरी है। तीसरा ओडीए भारत के बुनियादी ढांचे सहित भारत में निवेश पर्यावरण में सुधार भारत के सतत विकास और गरीबी में कमी लाने के लिए महत्वपूर्ण है। एक अनुमान के अनुसार भारत की 21 प्रतिशत से अधिक आबादी गरीबी रेखा में आती है जो दुनिया की कुल आबादी का एक तिहाई है। चौथा भारत दक्षिण एशियाई क्षेत्र में राजनीतिक और आर्थिक रूप से एक महत्वपूर्ण देश है। और अंतिम में भारत आर्थिक उदारीकरण और मार्किट इकॉनमी विनियमन की दिशा में सक्रिय प्रयासों सहित बाजार अर्थव्यवस्था के विकास को बढ़ावा दे रहा है। सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों (एमडीजी) को प्राप्त करने के दृष्टिकोण से भी ओडीए बहुत आवश्यक है। इसलिए भारत के विकास की दृष्टि से भारत में जापानी ओडीए अत्यधिक आवश्यक है।(वर्मा, 2009)

भारत में जापानी व्यापार और निवेश में जो सबसे बढ़ी अड़चन है वह भारत का दयनीय या खराब बुनियादी ढांचा है। इसलिए, यह कई आश्चर्य की बात नहीं है कि भारत को प्राप्त होने बाला ओडीए ऋण का एक बड़ा हिस्सा बिजली, बिजली और गैस, दूरसंचार और परिवहन क्षेत्रों जैसे कई बुनियादी ढांचागत परियोजनाओं के लिए आवंटित किया जाता है। वर्तमान में भारत में जापान लगभग 66 बुनियादी ढांचा परियोजनाओं को ओडीए प्रदान कर रहा है। जिसमे सबसे प्रमुख परियोजनाएं; डीएमआईसी (दिल्ली मुंबई औद्योगिक कॉरिडोर) डीएफसी (समर्पित फ्रेट कॉरिडोर) और Delhi Metro Rail Project (DMRC) हैं।

उपर्युक्त परियोजनाओं के अलावा अन्य महत्वपूर्ण परियोजनाएं जो जापान द्वारा आर्थिक रूप और तकनीकी रूप से समर्थित जैसे चेन्नई मेट्रो परियोजना, दिल्ली मास रैपिड ट्रांसपोर्ट सिस्टम प्रोजेक्ट, गुवाहाटी जल आपूर्ति परियोजना, केरल जल आपूर्ति परियोजना, रांगाली सिंचाई परियोजना, सिक्किम जैव विविधता संरक्षण और वन प्रबंधन परियोजना, हिमाचल प्रदेश फसल विविधीकरण संवर्धन परियोजना, तमिलनाडु जैव विविधता संरक्षण और ग्रीन प्रोजेक्ट पश्चिम बंगाल वन और जैव विविधता संरक्षण परियोजना, मध्य प्रदेश ट्रांसमिशन सिस्टम आधुनिकीकरण परियोजना और दिल्ली जल आपूर्ति सुधार परियोजना आदि कुछ प्रमुख प्रोजेक्ट हैं।

निष्कर्ष

भारत–जापान सम्बन्धो ने पिछले एक दशक में उल्लेखनीय रूप से वृद्धि की हैं। जिसका श्रेय दोनों राष्ट्रों के द्वारा किये गए राजनैतिक और आर्थिक प्रयसों को जाता हैं 2010 में CEPA पर हस्ताक्षर करने के बाद 2012–13 में द्विपक्षीय व्यापार शीर्ष पर पहुंच गया था। लेकिन फिर भी आज चीन जापान का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार बना हुआ है। दोनों राष्ट्रों के मध्य सम्भावनाओ के बाबजूद अच्छे आर्थिक सम्बन्धो का न होना वास्तव में चिंता का विषय है। दोनों राष्ट्रों के मध्य द्विपक्षीय आर्थिक संबंधों के विकास में सबसे बढ़ी रुकावट भारत की घरेलू चुनौतियां हैं। जिसमे जापान की सबसे बढ़ी चिंता भारत का खराब बुनियादी ढांचे का होना, श्रम कानून की जटिलता, नौकरशाही, उदारीकरण की प्रक्रिया को उचित तरीके से लागू करने के लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी आदि प्रमुख है।

आज आवश्यकता इस बात की हैं कि भारत–जापान द्विपक्षीय संबंधों को अच्छा बनाये रखते हुए पारस्परिक लाभ के लिए इस साझेदारी को उच्च स्तर पर लेजाया जाये। यही वह समय जब भारत और जापान के नेता, लोग और सिविल सोसाइटी को एक दूसरे के साथ कन्धा से कन्धा मिलाकर चलना पड़ेगा ताकि इस साझेदारी को और मजबूत किया सके। तथापि भारत एवं जापान को अपने द्विपक्षीय व्यापार में तेजी लाने की जरूरत है। भारत और जापान दो ऐसे साझेदार है जो शांतिपूर्ण एवं स्थिर एशिया प्रशांत क्षेत्र का तानाबाना बुनने में व्यस्त हैं। एशिया के दो सबसे बड़े लोकतंत्रों तथा एशिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से दो अर्थव्यवस्था के रूप में भारत और जापान के हित में है। तथा नेताओ की यह जिम्मेदारी भी है कि इस क्षेत्र का समुद्री वाणिज्य न

केवल भारत एवं जापान अपितु एशिया के सभी देशों के लिए भी परस्पर आर्थिक समृद्धि में योगदान करने के लिए अबाध रूप से जारी रहे। अंत में यह कहा जा सकता है कि भारत–जापान के दरम्यान सुरक्षा रणनीतिक और आर्थिक क्षेत्र में सहयोग के लिए बड़ी क्षमता है। जिनपर दोनों राष्ट्रों के नीतिनिर्धारकों को मिलकर काम करने की आवश्यकता हैं और यह सहयोग केवल इन दोनों देशों के बीच तक ही सीमित नहीं है बल्कि एशिया के विकास में भी मदद करेगा। और हम यह उम्मीद करते है कि आने वाले दशकों में भारत–जापान संबंध और अधिक मजबूत और दिवेर्सिफिय होकर उभरेंगे।

REFERENCES

गीतांजलि नटराज (2010) *इंडिया– जापान इन्वेस्टमेंट रिलेशनः ट्रेंड्स एंड प्रॉस्पेक्टस,* आईसीआरआईईआर, वर्किंग पेपर न 245 , न्यू डेल्ही, जैनवरी 2010।

वी पी दत्त (2016) *इंडियाज फोरेन पॉलिसी सिंस इंडिपेंडेंस,* नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया।

होरिमोटी तकेनोरी एंड लालिमा वर्मा (2013) *इंडिया जापान रिलेशन इन इमर्जिंग एशिया,* मनोहर पब्लिशर्स , न्यू डेल्ही।

सिंह, ललितमान (2007), *'भारत–जापान संबंध',* आईपीसीएस, संक्षिप्त विवरण, जनवरी 2007।

खन्ना वी एन (2013) *फॉरेन पॉलिसी ऑफ इंडिया,* विकास पब्लिशिंग हाउस, नोएडा।

लालिमा वर्मा (2009) 'जापान्स ऑफिशियल डेवपमेन्ट असिस्टेंट टू इंडिया, ए क्रिटिकल अप्रेजल' *इंडिया क्वॉर्टली जर्नल ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स*

मधुचंदा घोष (2008) इंडिया– जापान ग्रोइंग सिनर्जी : फ्रॉम पॉलिटिकल टू स्ट्रेटजिक फोकस, *एशियन सर्वे,* वॉल्यूम 48, मार्च– अप्रैल इस्यू।

जोशी एम पौल (2008), इंडिया– जापानः रेलेक्टांट इडियलिस्ट टू प्रैक्टिकल रियलिज्म, *साउट एशियन सर्वे,* दिसम्बर 2008।

माथुर अर्पिता (2012), *'इंडिया– जापान रिलेशन ड्राइवर्स, ट्रेंड्स एंड प्रॉस्पेक्टस'* आरएसआईएस मोनोग्राफ 26 पब्लिष्ड बाय राजरत्नम स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज, सिंगापुर

जापान–इंडिया रिलेशन मिनिस्ट्री ऑफ फॉरेन अफेयर्स जापान www.mofa.go.jp/region/asia-paci/india/index.html.

ज्वाइंट स्टेटमेंट टोवॉड्स इन्डिया–जापान स्ट्रेटजिक एंड ग्लोबल पार्टनरशिप, मिनसिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स, गवर्नमेंट ऑफइंडिया:http://mea.gov.in/bilateraldocuments.htm?dtl/6368/Joint+Statement+Towards+IndiaJapan+Strategic+and+Global+Partnership.

"विजन फोर इंडिया–जापान स्ट्रेटजिक एंड ग्लोबल पार्टनरशिप इन दा नेक्स्ट डिकेड" प्रेस इंफॉर्मेशन ब्यूरो, गवर्मेंट ऑफ इंडिया: http://pib.nic.in/newsite/PrintRelease.aspx?relid=66562.

ज्वाइंट स्टेटमेंट, विजिट ऑफ प्रणब मुखर्जी मिनिस्टर ऑफ डिफेंस टू जापानः http://mea.gov.in/bilateraldocuments.htm?dtl/6159/Joint+Statement+Visit+of+Mr+Pranab+Mukherjee+Minister+of+Defence+to+Japan.

इंडिया– जापान साइन लैंडमार्क सीविल न्यूक्लियर डील https://timesofindia.indiatimes.com/india/India-Japan-sign-landmark-civil-nuclear-deal/articleshow/55371858.cms.

इंडिया–जापान सिविल न्यूक्लियर कोऑपरेशन डील कम्स इंटो फोर्स http://www.financialexpress.com/india-news/india-japan-civil-nuclear-cooperation-deal-comes-into-force/771969/.

इंडिया–जापान इकोनोमिक रिलेशन, एंबैसे ऑफ इंडिया, टोक्यो, जापान, https://www.indembassytokyo.gov.in/india_japan_economic_relations.html,

जापान्स ओडिए दिसबर्समेंट टू इंडिया http://www.mofa.go.jp/policy/oda/region/sw_asia/india_o.pdf.

आउटलाइन ऑफ जापांस ओडीए टू इंडिया , मिनिस्ट्री ऑफ फौरन अफेयर्स , जापान http://www.mofa.go.jp/policy/oda/data/pdfs/india.pdf.